Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता

डॉ. कुलदीप कुमार पांडे
असिस्टेंट प्रोफेसर, ज्योति प्रकाश महिला बी.एड. महाविद्यालय, पलामू, झारखंड

सारांश
महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम मानता है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा श्रम की गरिमा का विकास करना है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः अंक, परीक्षा, प्रतिस्पर्धा और रोजगारोन्मुखी कौशलों पर केंद्रित है, जिसके कारण मूल्यपरक और मानवतावादी शिक्षा अपेक्षाकृत हाशिये पर चली गई है। इस शोध पत्र में गांधीजी के शिक्षा दर्शन और समकालीन शिक्षा व्यवस्था के बीच संबंधों का विश्लेषण किया गया है तथा यह स्पष्ट किया गया है कि 'नाई तालीम', कार्य-आधारित शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षण पद्धतियाँ आज की शिक्षा संबंधी चुनौतियों—जैसे नैतिक संकट, सामाजिक असमानता और बेरोज़गारी—के समाधान में सहायक हो सकती हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि गांधीवादी शिक्षा दर्शन आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, नैतिक और जीवनोपयोगी बनाने में आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: महात्मा गांधी, शिक्षा दर्शन, नाई तालीम, मूल्यपरक शिक्षा, वर्तमान शिक्षा प्रणाली

भूमिका

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय चिंतन परंपरा में एक समग्र, नैतिक तथा जीवनोपयोगी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसकी प्रासंगिकता आज की जटिल और तेजी से बदलती शिक्षा प्रणाली में और अधिक स्पष्ट होती जा रही है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास या डिग्री प्राप्ति नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति—को सुनिश्चित करना है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः परीक्षा, अंक, प्रतियोगिता और रोजगारोन्मुखी कौशलों पर केंद्रित होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप मूल्यपरक शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व और चरित्र निर्माण जैसे तत्व अपेक्षाकृत उपेक्षित हो गए हैं। ऐसे संदर्भ में गांधी का शिक्षा दर्शन एक वैकल्पिक और संतुलित मार्ग प्रदान करता है। गांधीजी की 'नाई तालीम' की अवधारणा शिक्षा को श्रम, जीवन और समाज

से जोड़ती है तथा आत्मनिर्भरता, कार्यकुशलता और सामाजिक संवेदनशीलता पर बल देती है। आज जब शिक्षा का बाजारीकरण, नैतिक पतन, बढ़ती बेरोज़गारी और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ सामने हैं, तब गांधीवादी शिक्षा दर्शन इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। उनका यह विचार कि शिक्षा स्थानीय आवश्यकताओं, संस्कृति और सामाजिक संदर्भों से जुड़ी होनी चाहिए, समकालीन शिक्षा सुधारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के साथ भी सामंजस्य स्थापित करता है। तकनीकी प्रगति और डिजिटल शिक्षा के इस युग में, जहाँ ज्ञान की उपलब्धता तो बढ़ी है, परंतु मानवीय मूल्यों और सामाजिक जुड़ाव में कमी देखी जा रही है, गांधी का शिक्षा दर्शन शिक्षा को मानवीय और नैतिक आधार प्रदान करता है। इस शोध पत्र की भूमिका के रूप में यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार गांधीजी के शिक्षा संबंधी विचार—जैसे मूल्य-आधारित शिक्षा, कार्य-आधारित अधिगम, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता—वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, नैतिक और जीवनोपयोगी बना सकते हैं। इस प्रकार, महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन केवल ऐतिहासिक महत्व तक सीमित नहीं है, बल्कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित एक ऐसी वैकल्पिक अवधारणा है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को जीवन, श्रम और नैतिक मूल्यों से जोड़ना रहा है। औपनिवेशिक काल की औपचारिक और परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था के विरोध में गांधीजी ने ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की जो आत्मनिर्भर नागरिकों का निर्माण कर सके और समाज में समानता व सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ बनाए। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा प्रणाली का तीव्र विस्तार हुआ, किंतु समय के साथ यह प्रणाली अधिक प्रतिस्पर्धात्मक, तकनीक-प्रधान और रोजगारोन्मुखी होती चली गई। परिणामस्वरूप शिक्षा का मानवीय, नैतिक और सामाजिक पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर पड़ गया। वर्तमान वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और डिजिटल युग में शिक्षा के समक्ष मूल्य संकट, बढ़ती असमानता और कौशल-असंतुलन जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आई हैं। ऐसे परिवेश में गांधीवादी शिक्षा दर्शन की पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक हो जाता है, ताकि समकालीन शिक्षा प्रणाली की कमियों का विश्लेषण कर एक संतुलित, मूल्यपरक और समाजोपयोगी शिक्षा दृष्टि विकसित की जा सके।

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन पर आधारित इस अध्ययन का औचित्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त वैचारिक, नैतिक और संरचनात्मक संकटों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। आज की शिक्षा व्यवस्था

अत्यधिक परीक्षा-केंद्रित, प्रतिस्पर्धात्मक और बाजार-उन्मुख होती जा रही है, जहाँ ज्ञान को मानवीय विकास के साधन के बजाय रोजगार प्राप्ति के उपकरण के रूप में देखा जाने लगा है। इसके परिणामस्वरूप छात्रों में नैतिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक संवेदनशीलता की कमी, मानसिक तनाव तथा आत्मनिर्भरता का अभाव जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। ऐसे संदर्भ में गांधीजी का शिक्षा दर्शन—जो सत्य, अहिंसा, श्रम की गरिमा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है—समकालीन शिक्षा के लिए एक सार्थक वैचारिक विकल्प प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह शिक्षा को केवल औपचारिक पाठ्यक्रमों और प्रमाणपत्रों तक सीमित न मानकर जीवनोपयोगी कौशल, चरित्र निर्माण और सामाजिक सहभागिता से जोड़ने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे आधुनिक शैक्षिक सुधारों के संदर्भ में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह अध्ययन शिक्षा और समाज के बीच गहरे अंतर्संबंध को समझने में सहायक है तथा यह स्पष्ट करता है कि यदि गांधीजी के शिक्षा सिद्धांतों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप समन्वित किया जाए, तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, नैतिक, संतुलित और समाजोपयोगी बनाया जा सकता है।

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन: सैद्धांतिक आधार

(i) गांधीजी का जीवन-दर्शन और शिक्षा की अवधारणा

महात्मा गांधी का जीवन-दर्शन सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, सेवा और आत्मनिर्भरता जैसे मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित था, जिनका गहरा प्रभाव उनकी शिक्षा संबंधी अवधारणा पर भी पड़ता है। गांधीजी के लिए शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं थी, बल्कि यह जीवन को सही दिशा देने वाली एक नैतिक प्रक्रिया थी। उनका मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर, कर्तव्यनिष्ठ और समाजोपयोगी बनाना है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

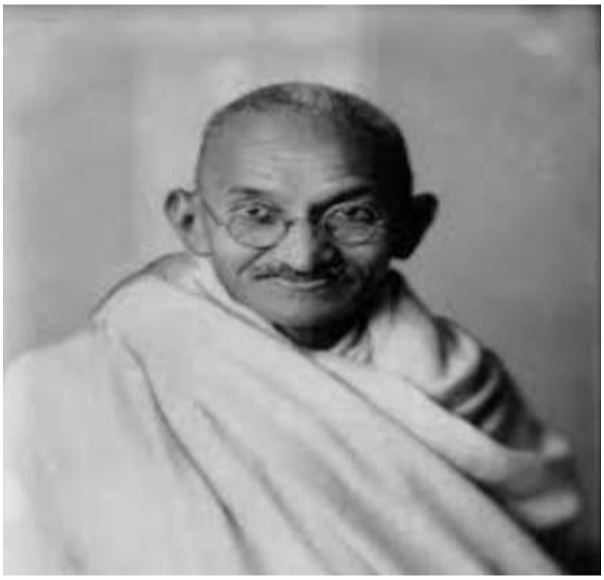

इसी दृष्टि से उन्होंने ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की जो जीवन और श्रम से जुड़ी हो तथा पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव को भी समान महत्व दे। गांधीजी की दृष्टि में शिक्षा और जीवन के बीच कोई विभाजन नहीं होना चाहिए; शिक्षा को दैनिक जीवन की समस्याओं, सामाजिक यथार्थ और मानवीय मूल्यों से सीधे जुड़ा होना चाहिए।

(ii) शिक्षा का नैतिक उद्देश्य

गांधीजी के शिक्षा दर्शन में नैतिकता का स्थान केंद्रीय है। वे मानते थे कि यदि शिक्षा नैतिक मूल्यों से रहित हो, तो वह समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, अनुशासन और आत्मसंयम जैसे गुणों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उनके अनुसार शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए, क्योंकि चरित्रहीन ज्ञान समाज को सही दिशा नहीं दे सकता। इस प्रकार नैतिक शिक्षा व्यक्ति को न केवल अच्छा नागरिक बनाती है, बल्कि उसे आत्मिक शांति और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी प्रदान करती है।

(iii) शिक्षा का सामाजिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्य

गांधीजी की शिक्षा अवधारणा का सामाजिक उद्देश्य समाज में समानता, सहयोग और सामाजिक न्याय की स्थापना करना था। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो वर्ग, जाति और आर्थिक असमानताओं को कम करने में सहायक हो। इसके साथ ही शिक्षा का आध्यात्मिक उद्देश्य आत्मबोध और आत्मविकास से जुड़ा हुआ था। गांधीजी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को केवल बाह्य संसार के लिए ही नहीं, बल्कि आंतरिक

नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी तैयार करती है। इस प्रकार उनका शिक्षा दर्शन व्यक्ति, समाज और आत्मा—तीनों के संतुलित विकास की सैद्धांतिक आधारशिला प्रस्तुत करता है।

नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा

(i) सत्य, अहिंसा, आत्मनिर्भरता और श्रम की गरिमा

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन में नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। गांधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा केवल नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि जीवन जीने की व्यावहारिक पद्धतियाँ हैं, जिन्हें शिक्षा के माध्यम से व्यवहार में उतारा जाना चाहिए। सत्य व्यक्ति में ईमानदारी और नैतिक साहस विकसित करता है, जबकि अहिंसा सहिष्णुता, करुणा और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाती है। आत्मनिर्भरता गांधीजी के शिक्षा विचार का एक प्रमुख तत्व है, जिसका आशय व्यक्ति को आर्थिक, मानसिक और नैतिक रूप से सक्षम बनाना है। इसी क्रम में श्रम की गरिमा पर उनका विशेष बल था; वे शारीरिक और बौद्धिक श्रम के बीच किसी प्रकार के भेद को स्वीकार नहीं करते थे। शिक्षा को श्रम से जोड़कर उन्होंने परिश्रम, अनुशासन और स्वावलंबन जैसे गुणों के विकास पर जोर दिया।

(ii) चरित्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य चरित्र निर्माण है। उनका मानना था कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति के आचरण और व्यवहार में परिलक्षित हो। मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति में सत्यनिष्ठा, कर्तव्यबोध, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है। ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को केवल सफल पेशेवर ही नहीं, बल्कि संवेदनशील और नैतिक नागरिक भी बनाती है। इस दृष्टि से गांधीवादी शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक संकट के समाधान हेतु अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

साहित्य समीक्षा

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन पर उपलब्ध साहित्य यह स्पष्ट करता है कि उनका शैक्षिक चिंतन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के नैतिक, सामाजिक और वैचारिक विकास का एक सशक्त आधार रहा है। *महात्मा गांधी के संग्रहित कार्य* (Gandhi, 2000) में उनके शिक्षा संबंधी विचार व्यापक रूप से बिखरे हुए मिलते हैं, जिनमें शिक्षा को आत्मनिर्भरता, सत्य, अहिंसा और श्रम की गरिमा से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र और सामाजिक चेतना का निर्माण है। यह दृष्टिकोण औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था की आलोचना के रूप में उभरता है, जो मुख्यतः क्लर्क तैयार करने और प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित थी। गांधी का यह मूल विचार आगे चलकर *नाई तालीम* या बुनियादी शिक्षा के रूप में विकसित हुआ, जिसे उन्होंने स्वतंत्र भारत के लिए उपयुक्त शिक्षा मॉडल माना।

कुमार (2005) ने *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा* में औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी शिक्षा विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि गांधीजी की शिक्षा संबंधी अवधारणा राष्ट्रवादी दृष्टि से प्रेरित थी, जिसका लक्ष्य स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और नैतिक नागरिकों का निर्माण करना था। कुमार के अनुसार, गांधीवादी शिक्षा दर्शन शिक्षा को सत्ता और प्रभुत्व के उपकरण के बजाय सामाजिक परिवर्तन के माध्यम के रूप में देखता है। इसी क्रम में पाठक (2007) ने शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधारों पर चर्चा करते हुए गांधीजी को एक ऐसे दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत किया है, जिनके विचार आदर्शवाद, व्यवहारवाद और मानवतावाद का समन्वय करते हैं। पाठक का मानना है कि गांधी का शिक्षा दर्शन समाज की संरचना, सांस्कृतिक संदर्भ और नैतिक मूल्यों को शिक्षा प्रक्रिया के केंद्र में रखता है, जो इसे समकालीन शिक्षा विमर्श में भी प्रासंगिक बनाता है।

नायर (2008) और दत्ता (2012) के शोध लेख गांधीवादी शिक्षा दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता पर विशेष रूप से केंद्रित हैं। नायर (2008) का तर्क है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली की परीक्षा-केंद्रित और रोजगारोन्मुख प्रवृत्तियों के कारण शिक्षा का मानवीय और नैतिक पक्ष कमजोर हुआ है, जिसे गांधीवादी शिक्षा दृष्टि संतुलित कर सकती है। वे *नाई तालीम* को एक ऐसे वैकल्पिक मॉडल के रूप में देखते हैं, जो शिक्षा को जीवन और समाज से जोड़ता है। इसी प्रकार दत्ता (2012) ने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि कार्य-आधारित शिक्षा न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, बल्कि विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का भी विकास करती है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि गांधीवादी शिक्षा दर्शन को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित कर अपनाया जा सकता है।

मुखर्जी (2013) और एनसीईआरटी (2014) का साहित्य मूल्यपरक और जीवन कौशल आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। मुखर्जी (2013) गांधीवादी दर्शन को मूल्य शिक्षा के संदर्भ में पुनर्विचारित करते हुए कहते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

हैं कि आधुनिक समाज में बढ़ते नैतिक संकट के समाधान के लिए शिक्षा में मूल्यों का समावेश अनिवार्य है। वे गांधी के सत्य, अहिंसा और सेवा जैसे मूल्यों को शिक्षा के व्यावहारिक ढाँचे में शामिल करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। वहीं एनसीईआरटी (2014) द्वारा प्रकाशित *मूल्य और जीवन कौशल शिक्षा* यह संकेत देती है कि समकालीन शिक्षा नीति भी नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को शिक्षा का अभिन्न अंग मानने लगी है, जो गांधीवादी दृष्टि से साम्य रखता है। समग्र रूप से यह साहित्य समीक्षा यह दर्शाती है कि यद्यपि विभिन्न विद्वानों ने गांधीजी के शिक्षा दर्शन को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया है, फिर भी सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनका शिक्षा चिंतन आज भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सीमाओं को समझने और उसे अधिक मानवीय, नैतिक तथा समाजोपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बुनियादी शिक्षा (नाई तालीम) की संकल्पना

(i) कार्य-आधारित शिक्षा

महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा अथवा *नाई तालीम* की संकल्पना शिक्षा के क्षेत्र में एक मौलिक और व्यवहारपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का केंद्र केवल पुस्तकें और कक्षा नहीं, बल्कि उत्पादक कार्य होना चाहिए। कार्य-आधारित शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें हस्तशिल्प, कृषि, कताई-बुनाई, कुटीर उद्योग जैसे कार्यों को शिक्षण का माध्यम बनाया जाए। इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि श्रम की गरिमा, अनुशासन, सहयोग और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को भी आत्मसात करते हैं। गांधीजी का मानना था कि शारीरिक और बौद्धिक श्रम का समन्वय शिक्षा को अधिक प्रभावी, रुचिकर और जीवनोपयोगी बनाता है। इस प्रकार *नाई तालीम* शिक्षा को समाज और उत्पादन से जोड़कर उसे व्यावहारिक आधार प्रदान करती है।

(ii) शिक्षा और जीवन/रोज़गार का संबंध

नाई तालीम की संकल्पना में शिक्षा और जीवन तथा रोज़गार के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया है। गांधीजी का विचार था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को आजीविका अर्जित करने में सक्षम बनाए और उसे समाज पर बोझ बनने से रोके। कार्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में व्यावसायिक दक्षता और आत्मविश्वास का विकास करती है, जिससे वे शिक्षा पूर्ण होने के बाद रोजगार या स्वरोज़गार के लिए तैयार

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

होते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ डिग्रीधारी बेरोज़गारी एक गंभीर समस्या बन चुकी है, वहाँ गांधीजी की यह अवधारणा विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होती है। शिक्षा को जीवन और रोजगार से जोड़कर *नाई तालीम* न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, बल्कि सामाजिक समानता और सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

शिक्षा का सामाजिक एवं लोकतांत्रिक आयाम

(i) समानता, सामाजिक न्याय और समावेशी शिक्षा

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन में शिक्षा का सामाजिक एवं लोकतांत्रिक आयाम केंद्रीय महत्व रखता है। गांधीजी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम मानते थे, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानताओं को कम करना और सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करना है। उनके अनुसार शिक्षा का अधिकार सभी के लिए समान होना चाहिए, चाहे व्यक्ति की जाति, वर्ग, लिंग या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। समावेशी शिक्षा की उनकी अवधारणा सामाजिक विभाजन को समाप्त कर सहयोग, सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान की भावना विकसित करती है। गांधीजी ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करे और हाशिये पर पड़े समुदायों को मुख्यधारा में सम्मिलित करे। लोकतांत्रिक समाज के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा केवल विशेष वर्ग तक सीमित न रहे, बल्कि वह जनसामान्य के सशक्तिकरण का साधन बने। इस दृष्टि से गांधीवादी शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समान अवसर, सामाजिक समरसता और न्यायपूर्ण व्यवस्था के निर्माण के लिए एक प्रासंगिक वैचारिक ढाँचा प्रस्तुत करता है।

(ii) ग्रामीण एवं वंचित वर्गों के लिए शिक्षा

गांधीजी का विशेष आग्रह था कि शिक्षा का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों और वंचित वर्गों तक प्रभावी रूप से पहुँचे। वे मानते थे कि भारत की आत्मा गाँवों में निवास करती है और यदि ग्रामीण समाज शिक्षित, आत्मनिर्भर और जागरूक नहीं होगा, तो राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की जो ग्रामीण जीवन, स्थानीय आवश्यकताओं और पारंपरिक कौशलों से जुड़ी हो। वंचित वर्गों—जैसे दलित, महिलाएँ और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय—के लिए शिक्षा को गांधीजी सामाजिक मुक्ति का माध्यम मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा इन वर्गों में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और अधिकार-बोध विकसित करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शहरी–ग्रामीण विषमता, संसाधनों की

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

असमान उपलब्धता और अवसरों की कमी जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। ऐसे संदर्भ में गांधीजी का शिक्षा दर्शन यह संदेश देता है कि यदि शिक्षा को लोकतांत्रिक, विकेंद्रीकृत और समावेशी बनाया जाए, तो वह सामाजिक सशक्तिकरण और सतत विकास का प्रभावी साधन बन सकती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप

(i) समकालीन शिक्षा के लक्ष्य और संरचना

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के प्रभाव में निरंतर परिवर्तनशील बनी हुई है। समकालीन शिक्षा के प्रमुख लक्ष्य मानव संसाधन का विकास, रोजगारोन्मुख कौशलों का निर्माण, तकनीकी दक्षता तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम नागरिकों का निर्माण माने जाते हैं। शिक्षा की संरचना औपचारिक पाठ्यक्रमों, मानकीकृत पाठ्यपुस्तकों, निर्धारित मूल्यांकन प्रणालियों और परीक्षा-आधारित उपलब्धि मापदंडों पर आधारित है। विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को एक क्रमबद्ध और संस्थागत ढाँचे में संगठित किया गया है, जिसमें ज्ञान के हस्तांतरण पर विशेष बल दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा अधिक केंद्रीकृत और परिणाम-उन्मुख होती जा रही है। यद्यपि इस व्यवस्था ने साक्षरता दर, तकनीकी ज्ञान और व्यावसायिक विशेषज्ञता में वृद्धि की है, तथापि इसके भीतर मानवीय संवेदनशीलता, नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं।

(ii) तकनीकी, प्रतियोगी एवं बाजार-उन्मुख शिक्षा

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीक की भूमिका अत्यंत निर्णायक हो गई है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ई-लर्निंग संसाधनों ने ज्ञान की पहुँच को व्यापक बनाया है, किंतु इसके साथ ही शिक्षा का स्वरूप अधिक प्रतियोगी और बाजार-उन्मुख होता चला गया है। शिक्षा को आज एक निवेश और उत्पाद के रूप में देखा जाने लगा है, जहाँ डिग्री, रैंकिंग और संस्थागत प्रतिष्ठा को सफलता का प्रमुख मानक माना जाता है। इस प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में विद्यार्थियों पर शैक्षणिक दबाव, मानसिक तनाव और असमान अवसरों की समस्या बढ़ती जा रही है। बाजार-उन्मुख शिक्षा प्रणाली रोजगार की मांगों के अनुसार पाठ्यक्रमों को ढालती है, जिससे त्वरित कौशल विकास तो संभव होता है, परंतु व्यापक मानवीय और सामाजिक दृष्टिकोण का विकास सीमित रह जाता है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली उपलब्धियों के बावजूद संतुलन की चुनौती से जूझ रही है, जो यह संकेत देती है कि शिक्षा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

को तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक मूल्यों से भी समन्वित करने की आवश्यकता है।

गांधीवादी शिक्षा दर्शन और आधुनिक शिक्षा: तुलनात्मक विश्लेषण

(i) उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच तुलनात्मक विश्लेषण से शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में मौलिक अंतर स्पष्ट होता है। गांधीवादी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक पक्षों का संतुलित समन्वय निहित है। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा का लक्ष्य प्रायः ज्ञान-संचय, तकनीकी दक्षता और रोजगारोन्मुख कौशलों के विकास तक सीमित होता जा रहा है। गांधीजी के अनुसार पाठ्यक्रम जीवन से जुड़ा, स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित और कार्य-केंद्रित होना चाहिए, जबकि आधुनिक शिक्षा में पाठ्यक्रम अधिकतर मानकीकृत, विषय-केंद्रित और सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित होता है। शिक्षण विधियों के स्तर पर गांधीवादी दृष्टिकोण अनुभवात्मक, सहभागितापूर्ण और श्रम-आधारित अधिगम पर बल देता है, जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षण विधियाँ अभी भी मुख्यतः कक्षा-केंद्रित, व्याख्यान-आधारित और पाठ्यपुस्तक-प्रधान दिखाई देती हैं, यद्यपि तकनीकी नवाचारों ने शिक्षण को कुछ हद तक संवादात्मक बनाया है।

(ii) मूल्य-आधारित बनाम परीक्षा-केन्द्रित शिक्षा

गांधीवादी शिक्षा दर्शन और आधुनिक शिक्षा के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर मूल्य-आधारित और परीक्षा-केन्द्रित दृष्टिकोण में दिखाई देता है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का वास्तविक मापदंड परीक्षा परिणाम नहीं, बल्कि विद्यार्थी का चरित्र, आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व होना चाहिए। सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, सहयोग और श्रम की गरिमा जैसे मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया में स्वाभाविक रूप से विकसित होने चाहिए। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन का केंद्र बिंदु अंक, ग्रेड और रैंकिंग बन गया है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा और उपलब्धि तक सिमटता जा रहा है। इस परीक्षा-केन्द्रित व्यवस्था के कारण रचनात्मकता, नैतिक विकास और सामाजिक संवेदनशीलता अक्सर गौण हो जाती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में तनाव, असुरक्षा और मूल्य-विच्छेदन की प्रवृत्ति बढ़ती है। तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ आधुनिक शिक्षा व्यावसायिक सफलता के लिए आवश्यक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

दक्षताएँ प्रदान करती है, वहीं गांधीवादी शिक्षा दर्शन जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक समरसता और नैतिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देता है। इस प्रकार दोनों प्रणालियों के समन्वय से ही एक संतुलित, मानवीय और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का निर्माण संभव है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता

(i) नैतिक शिक्षा, कौशल विकास और आत्मनिर्भरता

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा, कौशल विकास और आत्मनिर्भरता के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है। आज की शिक्षा व्यवस्था जहाँ तकनीकी दक्षता और रोजगारोन्मुख कौशलों पर केंद्रित है, वहीं नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मसंयम जैसे पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर पड़ते जा रहे हैं। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसा व्यक्तित्व विकसित करना है जो नैतिक रूप से सुदृढ़ और सामाजिक रूप से उत्तरदायी हो। उनकी *नाई तालीम* की अवधारणा शिक्षा को उत्पादक कार्य और कौशल प्रशिक्षण से जोड़ती है, जिससे विद्यार्थी न केवल व्यावहारिक दक्षता अर्जित करते हैं, बल्कि श्रम की गरिमा और आत्मनिर्भरता का महत्व भी समझते हैं। वर्तमान समय में जब शिक्षित बेरोज़गारी एक गंभीर समस्या बन चुकी है, गांधीवादी शिक्षा दर्शन स्वरोज़गार, कुटीर उद्योगों और स्थानीय संसाधनों के उपयोग के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके साथ ही नैतिक शिक्षा व्यक्ति को ईमानदारी, अनुशासन और सामाजिक संवेदनशीलता जैसे गुणों से युक्त बनाती है, जो किसी भी पेशे और सामाजिक जीवन के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार गांधी दर्शन आधुनिक शिक्षा प्रणाली को मूल्य-आधारित और व्यवहारपरक दिशा प्रदान करता है।

(ii) जीवन कौशल (Life Skills) और नागरिक चेतना

गांधीजी के शिक्षा विचारों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे जीवन कौशल और नागरिक चेतना के विकास पर विशेष बल देते हैं। जीवन कौशल—जैसे आत्मअनुशासन, समस्या-समाधान क्षमता, सहयोग, सहिष्णुता और निर्णय लेने की दक्षता—आज के जटिल सामाजिक और व्यावसायिक परिवेश में अत्यंत आवश्यक हो गए हैं। गांधीवादी शिक्षा दर्शन इन कौशलों को पुस्तकीय ज्ञान के बजाय अनुभव, सेवा और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से विकसित करने की बात करता है। इसके अतिरिक्त, गांधीजी शिक्षा को लोकतांत्रिक समाज के निर्माण का साधन मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य

जागरूक, जिम्मेदार और सक्रिय नागरिक तैयार करना है, जो अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी सजग हों। वर्तमान समय में, जब नागरिक उदासीनता, सामाजिक विघटन और नैतिक संकट जैसी समस्याएँ उभर रही हैं, गांधी का शिक्षा दर्शन नागरिक चेतना को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों का विकास कर एक उत्तरदायी नागरिक समाज का निर्माण संभव है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि गांधी दर्शन न केवल व्यक्तिगत विकास, बल्कि सामाजिक स्थिरता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए भी आज की शिक्षा प्रणाली में अत्यंत प्रासंगिक है।

गांधीवादी शिक्षा दर्शन की सीमाएँ एवं आलोचनाएँ

(i) आधुनिक विज्ञान और तकनीक के संदर्भ में चुनौतियाँ

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन नैतिकता, आत्मनिर्भरता और श्रम-आधारित अधिगम पर आधारित है, किंतु आधुनिक विज्ञान और तकनीक के तीव्र विकास के संदर्भ में इसकी कुछ सीमाएँ और आलोचनाएँ भी सामने आती हैं। समकालीन विश्व ज्ञान, नवाचार और तकनीकी दक्षता पर आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है, जहाँ उन्नत विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्विक संचार का विशेष महत्व है। आलोचकों का मत है कि गांधीजी की *नाई तालीम* की अवधारणा पारंपरिक शिल्पों और स्थानीय उद्योगों पर अधिक केंद्रित थी, जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान और उच्च तकनीकी कौशलों के विकास की संभावनाएँ सीमित हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में केवल स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में अपर्याप्त मानी जाती है। यह भी कहा जाता है कि गांधीजी का तकनीक के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत संदेहपूर्ण था, जो आधुनिक नवाचार और वैज्ञानिक प्रगति के साथ पूर्णतः सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। इस प्रकार, विज्ञान और तकनीक-प्रधान वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में गांधीवादी शिक्षा दर्शन को अद्यतन करने की आवश्यकता अनुभव की जाती है।

(ii) व्यावहारिक क्रियान्वयन की कठिनाइयाँ

गांधीवादी शिक्षा दर्शन की एक प्रमुख चुनौती उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन से संबंधित है। *नाई तालीम* जैसी कार्य-आधारित शिक्षा को लागू करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों, उपयुक्त अवसंरचना, कार्यशालाओं और स्थानीय संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो अधिकांश शैक्षिक संस्थानों में सहज रूप से उपलब्ध

नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की परीक्षा-केन्द्रित और प्रमाणपत्र-आधारित संरचना गांधीवादी शिक्षा के मूल उद्देश्यों से मेल नहीं खाती। अभिभावकों और समाज की अपेक्षाएँ भी प्रायः ऐसी शिक्षा से जुड़ी होती हैं जो त्वरित रोजगार और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करे, जिससे गांधीवादी शिक्षा मॉडल को स्वीकार्यता प्राप्त करना कठिन हो जाता है। प्रशासनिक स्तर पर भी पाठ्यक्रम निर्धारण, मूल्यांकन पद्धति और मानकीकरण की समस्याएँ सामने आती हैं। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण-आधारित और श्रम-केंद्रित शिक्षा की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाए जाते हैं। इन सभी सीमाओं के बावजूद, यह कहा जा सकता है कि गांधीवादी शिक्षा दर्शन को पूर्णतः अस्वीकार करने के बजाय उसे आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित और समन्वित करने की आवश्यकता है, ताकि उसके नैतिक और मानवीय मूल्यों को समकालीन शिक्षा प्रणाली में प्रभावी रूप से समाहित किया जा सके।

शिक्षा नीति और गांधी दर्शन

(i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के संदर्भ में गांधीवादी विचार

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन और समकालीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के बीच वैचारिक साम्य के अनेक बिंदु दृष्टिगोचर होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को समग्र, समावेशी, लचीला और जीवनोपयोगी बनाना है, जो मूलतः गांधीजी की शिक्षा संबंधी अवधारणाओं के अनुरूप है। गांधीजी शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता से जोड़ते थे। इसी प्रकार NEP में भी बहु-विषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, मातृभाषा में शिक्षा, और स्थानीय ज्ञान व संस्कृति के समावेश पर विशेष बल दिया गया है। *नाई तालीम* की तरह ही नीति में कक्षा के भीतर और बाहर सीखने, कौशल विकास तथा व्यावहारिक ज्ञान को महत्व दिया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा में समान अवसर, समावेशिता और सामाजिक न्याय जैसे लक्ष्य गांधीवादी विचारधारा के लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधीजी के शिक्षा दर्शन को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास करती है।

(ii) मूल्य-आधारित एवं कौशल-आधारित शिक्षा के समन्वय की संभावनाएँ

वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में सबसे बड़ी आवश्यकता मूल्य-आधारित और कौशल-आधारित शिक्षा के संतुलित समन्वय की है, और इस संदर्भ में गांधी दर्शन अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति को नैतिक रूप से सुदृढ़ और व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाए। आज की शिक्षा प्रणाली कौशल विकास पर तो बल देती है, किंतु नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता के विकास में अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देती है। यदि गांधीवादी मूल्यों—जैसे सत्य, अहिंसा, श्रम की गरिमा, सहयोग और सामाजिक सेवा—को आधुनिक कौशल-आधारित पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ा जाए, तो एक अधिक संतुलित शिक्षा मॉडल विकसित किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रस्तावित व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता, स्थानीय शिल्प और सामुदायिक सहभागिता जैसी पहलें इस समन्वय की संभावनाओं को और सुदृढ़ करती हैं। इससे शिक्षा न केवल रोजगारोन्मुख बनेगी, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और नागरिक चेतना का भी विकास होगा। इस प्रकार शिक्षा नीति और गांधी दर्शन का समन्वय वर्तमान और भविष्य की शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय, नैतिक और सतत विकासोन्मुख दिशा प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनका दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक महत्व तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा प्रणाली के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक दिशा-निर्देश प्रदान करता है। इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि गांधीजी ने शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास—शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति—का माध्यम माना, जबकि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था प्रायः परीक्षा, प्रतिस्पर्धा और रोजगारोन्मुखता तक सीमित होती जा रही है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि *नाई तालीम*, कार्य-आधारित शिक्षा, मूल्यपरक अधिगम, सामाजिक समावेशिता और आत्मनिर्भरता जैसे गांधीवादी सिद्धांत आज की शिक्षा प्रणाली में व्याप्त नैतिक संकट, बेरोज़गारी, सामाजिक असमानता और नागरिक उदासीनता जैसी समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकते हैं। यद्यपि आधुनिक विज्ञान, तकनीक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा दर्शन की कुछ सीमाएँ और व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं, तथापि इसके मूल मानवीय और नैतिक मूल्यों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित कर प्रभावी रूप से अपनाया जा सकता है। वर्तमान और भविष्य की शिक्षा के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा नीति और पाठ्यक्रम

निर्माण में मूल्य-आधारित एवं कौशल-आधारित शिक्षा का संतुलित समन्वय किया जाए, जिससे विद्यार्थी न केवल व्यावसायिक रूप से सक्षम हों, बल्कि नैतिक रूप से जागरूक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक भी बन सकें। इसके अतिरिक्त, शिक्षा को स्थानीय संदर्भों, सामुदायिक सहभागिता और जीवनोपयोगी कौशलों से जोड़ने की आवश्यकता है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि गांधीजी के शिक्षा दर्शन को आधुनिक शैक्षिक ढाँचे के साथ समन्वित किया जाए, तो एक अधिक समावेशी, मानवीय और सतत शिक्षा प्रणाली का निर्माण संभव है।

संदर्भ

1. गांधी, एम. के. (2000). महात्मा गांधी के संग्रहित कार्य (खंड 1–100). नई दिल्ली: प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार.
2. कुमार, के. (2005). शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा: उपनिवेशवादी और राष्ट्रवादी विचारों का एक अध्ययन. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस.
3. पाठक, आर. पी. (2007). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार. नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन.
4. नायर, टी. बी. (2008). शिक्षा का गांधीवादी दर्शन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 44(2), 45–56.
5. सुहृद, टी. (2011). इक्कीसवीं सदी में गांधी को पढ़ना. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. दत्ता, डी. एम. (2012). बुनियादी शिक्षा की गांधीवादी अवधारणा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता. जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 6(1), 23–34.
7. मुखर्जी, एस. (2013). मूल्यों के लिए शिक्षा: गांधीवादी दर्शन पर पुनर्विचार. एजुकेशनल क्रेस्ट, 4(3), 185–191.
8. एनसीईआरटी. (2014). मूल्य और जीवन कौशल शिक्षा. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.
9. अग्रवाल, जे. सी. (2015). शिक्षा के सिद्धांत और नियम. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.
10. तिलक, जे. बी. जी. (2016). भारत में शिक्षा, असमानता और विकास. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 51(26–27), 32–38.

11. शर्मा, आर. ए. (2017). शिक्षा के दार्शनिक आधार. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो.
12. कुमार, के. (2018). शिक्षा, लोकतंत्र और सामाजिक परिवर्तन: एक गांधीवादी परिप्रेक्ष्य. सोशल चेंज, 48(2), 247–260.
13. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय. सिंह, आर., और मिश्रा, पी. (2021). भारत में गांधीवादी शैक्षिक दर्शन और मूल्य-आधारित शिक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 10(4), 55–63।
14. वर्मा, एस. (2023). 21वीं सदी में शिक्षा के गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता। जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन, 49(1), 89–101।